No. of Printed Pages : 6 **MBG–006**

M. A. (BHAGAVADGITA STUDIES)
(MABGS)
Term-End Examination
June, 2026

MBG-006 : VISHWARUPA DARSHAN AVAM UPASANA

Time : 3 Hours *Maximum Marks : 100*

Note : *(i) This question paper is in two Sections. Both Sections are compulsory.*

(ii) Attempt questions from both Sections as per the instruction given.

(iii) Write the answers in either Hindi or Sanskrit or English.

Section—A

Note *: Answer any* ***four*** *of the following questions.* 4×15=60

1. Why did Śrikriṣna give the 'divyacakṣu' for viewing his form ? Give a fundamental explanation on the basis of the Gītā.

2. Explain the capabilities of 'manuṣya' and 'parameśvar' on the basis of the statements from the Bhagavadgītā.
3. Write about the nature and the importance of 'saguṇa-brahma' in your own words.
4. What is 'ananya bhakti' ? Write in detail.
5. Write in detail about political responsibility on the basis of the Bhagavadgītā.
6. What is 'viśvarūpa' according to the Gītā ? Discuss.
7. Explain in detail the nature of 'akṣara-brahm' according to the Gītā.

Section—B

***Note** : Answer any **four** of the following questions.* 4×10=40

1. What is Collective Responsibility as described in the Gītā ? Write a short note.
2. Define 'upāsaka' on the basis of the Gītā.
3. Write an analytical note on the nature of 'dāna' according to the Gītā.

4. Which types of elements related to education are found in the Bhagavadgītā ? Describe in your own words.

5. What is 'anugraha' according to the Gītā ? Describe who is entitled for it.

6. Which 'upāsānā' is ephasised in the Gītā ? Write in your own words.

7. Analyse the essence along with the meaning of the following verses :

   (a) कालोऽस्मि लोकक्षयकृतप्रवृद्धो

   लोकांसमाहर्तुमिह प्रवृत्तः।

   ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे

   येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

   (b) ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।

   श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥

MBG–006

एम. ए. (भगवद्गीता अध्ययन)

(एम. ए. बी. जी. एस.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.बी.जी.-006 : विश्वरूप दर्शन एवं उपासना

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i) यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों में विभक्त है। दोनों खण्ड अनिवार्य हैं।*

(ii) खण्डों में दिए गए निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।

(iii) हिन्दी अथवा संस्कृत अथवा अंग्रेजी में से किसी एक भाषा में उत्तर दीजिए।

खण्ड—क

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 15 = 60$

1. श्री कृष्ण ने स्वरूप देखने के लिए दिव्यचक्षु क्यों दिया ? गीता के आधार पर इसकी तात्त्विक व्याख्या कीजिए।

2. मनुष्य और परमेश्वर की सामर्थ्य के लिए भगवद्गीता आधारित तथ्यों की व्याख्या कीजिए।
3. सगुण-ब्रह्म के स्वरूप और महत्त्व को अपने शब्दों में लिखिए।
4. अनन्य भक्ति क्या है ? विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. भगवद्गीता आधारित राजनीतिक उत्तरदायित्व की अवधारणा का विस्तृत वर्णन कीजिए।
6. गीता के आधार पर विश्वरूप क्या है ? विवेचना कीजिए।
7. गीता के आधार पर अक्षर-ब्रह्म के स्वरूप की विस्तृत व्याख्या कीजिए।

खण्ड—ख

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

$4 \times 10 = 40$

1. गीता में वर्णित सामूहिक उत्तरदायित्व क्या है ? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
2. गीता के आधार पर उपासक को परिभाषित कीजिए।
3. गीता आधारित दान के स्वरूप पर समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए।

4. भगवद्गीता में किस प्रकार के शिक्षा सम्बन्धी तत्त्व पाए जाते हैं ? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

5. गीता के अनुसार अनुग्रह क्या है ? इसके अधिकारी का वर्णन कीजिए।

6. गीता में कौन-सी उपासना पर अधिक बल दिया गया है ? अपने शब्दों में लिखिए।

7. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ सहित भावविश्लेषण कीजिए :

(क) कालोऽस्मि लोकक्षयकृतप्रवृद्धो
लोकांसमाहर्तुमिह प्रवृत्तः।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः॥

(ख) ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः॥

× × × × ×